सपनों के से दिन

एक आत्मकथात्मक चित्रण

गुरदयाल सिंह द्वारा रचित एक संस्मरण जो बचपन की धूल, स्कूल के डर और मानवीय स्वभाव की जटिलताओं को उजागर करता है।

NotebookLM

बचपन की दुनिया: खेल और धूल

बचपन साफ-सुथरे कपड़ों का नहीं था। वह था—फटे-पुराने कुर्ते, टूटे बटन और धूल भरे पाँव।

खेलते समय गिरकर चोट लगती, पिंडलियों से खून निकलता, पर अगले दिन फिर खेलने पहुँच जाते।

माँ-बहनों से पिटाई खाने के बाद भी बच्चों को खेलना इतना प्यारा क्यों था? यह बात बाल-मनोविज्ञान पढ़ने के बाद समझ आई।

NotebookLM

टोली और 'रेल-बंबा'

- साथी अधिकतर राजस्थान या हरियाणा के थे। बोलियां अलग थीं, पर खेल की भाषा एक थी।
- ओमा हमारा नेता था। उसका लड़ने का तरीका सबसे अलग था।
- वह हाथ-पाँव से नहीं, सिर से लड़ता था। उसका सिर सिर 'रेल-बंबा' (Rail Engine) कहलाता था। वह साँड की तरह सिर झुकाकर पेट में टक्कर मारता था।

NotebookLM

स्कूल: एक 'कैद'

नई श्रेणी में जाने का चाव नहीं, बल्कि पुरानी
कॉपी-किताबों की अजीब गंध उदास कर देती थी।

स्कूल के रास्ते में उगे 'अलियार' के झाड़ों की गंध
आज भी मन को उदास कर देती है।

हम स्कूल के कमरे में बैठकर पढ़ने को 'कैद' समझते थे।

NotebookLM

ननिहाल: खुशियों का घर

- नानी खूब दूध, दही, मक्खन खिलाती और बहुत प्यार करती।
- दोपहर तक तालाब में नहाते। नानी हमारे बोलने के ढंग (जिसमें ‘ब’ और ‘व’ का फर्क नहीं था) पर बहुत खुश होती।
- जिस साल ननिहाल न जा पाते, वह साल उदासी में बीतता।

NotebookLM

छुट्टियों का गृहकार्य और 'सस्ता सौदा'

छुट्टियों की शुरुआत

10 दिन शेष

200 सवाल... बहुत समय है

डर और घबराहट

मास्टरों की पिटाई, होमकर्क पूरा करने की बजाय अधिक ‘सस्ता सौदा’ लगती थी।
हम पिटाई से डरने वाले भी उन ‘बहादुरों’ की तरह सोचने लगते जो होमकर्क नहीं करते थे।

NotebookLM

हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा: विनम्रता की मूरत

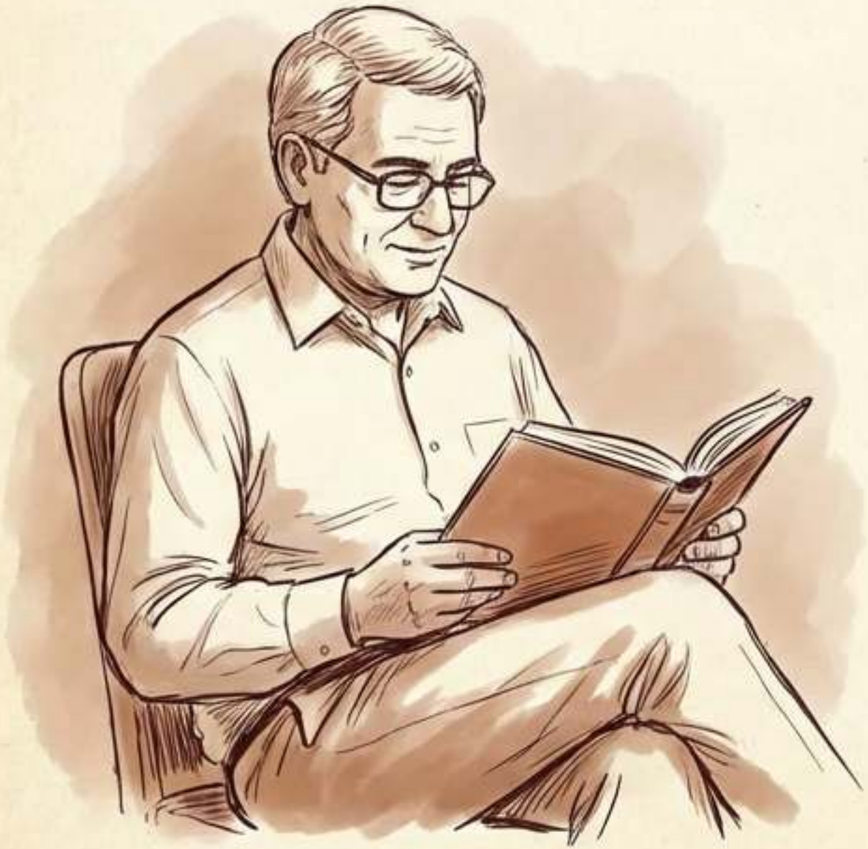

- वे पाँचवीं और आठवीं कक्षा को अंग्रेजी पढ़ाते थे।
- उन्हें कभी किसी छात्र की 'चमड़ी उधेड़ते' (बर्बर पिटाई करते) नहीं देखा।
- गुस्से में केवल गाल पर एक हल्की 'चपत' लगाते। वह चपत हमें नमकीन पापड़ी जैसी मजेदार लगती थी।

NotebookLM

पी.टी. मास्टर प्रीतम चंद: साक्षात भय

~ ठिगना कद, चेचक के दागों वाला चेहरा और बाज जैसी तेज आँखें।

~ खाकी वर्दी और चमड़े के पंजों वाले भारी बूट। बूटों के नीचे लोहे की खुरियाँ और कीलें लगी होती थीं।

~ यदि कोई कतार में सिर भी हिलाता, तो वे बाघ की तरह झपट पड़ते।

NotebookLM

स्काउटिंग: जब हम ‘फौजी’ बनते

धोबी की धुली वर्दी, पॉलिश किए बूट और दोरंगे रूमाल।
जब पी.टी. सर ‘शाबाश’ कहते, तो लगता जैसे हमने फौज के सभी तमगे (Medals) जीत लिए हों।
साल भर की ‘गुड’ (Good) से ज्यादा कीमती वह एक ‘शाबाश’ होती थी।

NotebookLM

दूसरा कन विश्वयुद्ध और भर्ती के गीत

नाभा रियासत में अंग्रेजों की चलती थी। लोगों को फौज में भर्ती करने के लिए नौटंकी वाले आते थे।

भर्ती हो जा रे रंगरुट, भर्ती हो जा रे...
अठे मिले से टूटे लीतर, उठे मिलेंगे बूट।

खाकी वर्दी और बूट पहनकर हम भी खुद को फौजी जवान समझने लगते थे।

NotebookLM

फारसी की कक्षा: वह भयानक दिन

चौथी कक्षा में फारसी पढ़ना अंग्रेजी से भी मुश्किल था। हमें शब्द-रूप याद करने थे।

अगले दिन कोई भी लड़का शब्द-रूप नहीं सुना पाया।

मास्टर जी ने 'मुर्गा' बनने का आदेश दिया। पीठ ऊँची करके कान पकड़ने से टांगों में भयंकर जलन होने लगती थी।

कमजोर लड़के गिर पड़ते, तो वे चीखते—'पीठ ऊँची करो!'

NotebookLM

हेडमास्टर का हस्तक्षेप

हेडमास्टर शर्मा जी उधर से निकले। बच्चों की हालत देखकर वे सहन नहीं कर पाए।

“What are you doing? Stop it at once!”

शर्मा जी ने पी.टी. मास्टर को मुअत्तल (Suspend) कर दिया।

NotebookLM

इंसान की जटिलता: तोते और बादाम

निलंबन के बाद, पी.टी. मास्टर अपने चौबारे में आराम से रह रहे थे।

वे पिंजरे में बंद तोतों को भीगे हुए बादामों के छिलके उतारकर खिला रहे थे और उनसे मीठी बातें कर रहे थे।

जो आदमी बच्चों की खाल उधेड़ देता था, वह पक्षियों के साथ इतना कोमल कैसे हो सकता है?

NotebookLM

मुख्य विचार और निष्कर्ष

- अनुशासन जरूरी है, लेकिन भय और क्रूरता शिक्षण का हिस्सा नहीं होने चाहिए।
- इंसान का स्वभाव एकतरफा नहीं होता—कठोर से कठोर व्यक्ति के भीतर भी कोमलता छिपी हो सकती है।
- कठिनाइयों के बावजूद, वह बचपन ‘सपनों’ जैसा ही था।

NotebookLM

आत्म-चिंतन

- नई श्रेणी में जाने और नई कॉपियों की गंध से लेखक का बाल-मन उदास क्यों हो उठता था?
- स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण 'फौजी जवान' क्यों समझने लगता था?
- आपके जीवन में 'हेडमास्टर शर्मा' और 'पी.टी. मास्टर प्रीतम चंद' जैसे पात्र कौन रहे हैं?

NotebookLM